पानी के लिए होगा तीसरा विश्व युद्ध

संध्या रायचौधरी

पिछले दिनों स्टॉकहोम में विश्व जल सप्ताह मनाते हुए संकल्प लिया गया कि वर्ष 2015 में राष्ट्र संघ सहस्राब्दी लक्ष्य हासिल कर लेने के बाद वर्ष 2030 तक पानी को वैश्विक विकास के केंद्र के रूप में रखा जाएगा। संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक स्थिति को देखते हुए चिंता प्रकट की है कि यदि समय रहते हुए उचित प्रयास न किए गए तो पानी के लिए तीसरा विश्व युद्ध छिड़ सकता है। भारत के फिल्म निर्देशक शेखर कपूर की आने वाली फिल्म पानी भी इसी मुद्दे को उठाएगी कि किस तरह अगले 20-25 सालों में पानी जल माफियाओं के कब्ज़े में होगा।

अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन ने कहा था कि व्हिस्की पीने के लिए है और पानी लड़ने के लिए। यदि सरकारें इस मामले में मूकदर्शक बनी रहीं तो वास्तव में दुनिया एक बड़े संकट का सामना करने के लिए विवश होगी। आज हालत यह है कि दुनिया के 78 करोड़ लोगों को स्वच्छ पानी नहीं मिलता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वर्ष 2025 तक दुनिया के दो-तिहाई देशों में पानी की दिक्कत काफी बढ़ जाएगी, जबकि एशिया और विशेष तौर पर भारत में 2020 में ही ऐसी स्थिति आ सकती है। यदि यह संकट पैदा हुआ तो अर्थव्यवस्था बैक गियर में चलने को विवश हो जाएगी। भारत और चीन जैसी उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ विकसित अर्थव्यवस्थाएं भी इसकी गिरफ्त में आ सकती हैं।

वर्ष 2050 तक दुनिया की आबादी लगभग नौ अरब तक पहुंच जाएगी। स्वाभाविक है कि तब पानी और भोजन की मांग बढ़ेगी। संभव है अधिक उत्पादन के लिए पानी के अधिकाधिक दोहन के साथ-साथ प्रकृति का विनाश बढ़े, जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्या और बढ़े। राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट बताती है कि कृषि की बढ़ती ज़रूरतों, खाद्यान्न उत्पादन, ऊर्जा उपभोग, प्रदूषण और जल प्रबंधन की कमज़ोरियों की वजह से स्वच्छ जल पर लगातार दबाव बढ़ रहा है और आगे भी बढ़ता रहेगा।

दुनिया की विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाएं अपने विकास के साथ-साथ कई प्रकार के संकटों को भी जन्म दे रही हैं। अधिकांश विकासशील देशों में पानी की कमी से अकाल जैसी स्थिति सबसे बड़ी चुनौती के रूप में देखी जा सकती है। इन देशों में पिछली सदी में अन्य प्राकृतिक आपदाओं की तुलना में सूखे के कारण सर्वाधिक मौतें हुईं। यही नहीं, पिछले 50 वर्षों में पानी के लिए 37 भीषण हत्याकांड हुए हैं। इस स्थिति से गुज़रने वाले महाद्वीपों में एशिया और अफ्रीका सबसे आगे हैं। अनुमान है कि आने वाले समय में दक्षिण एशिया, पूर्वी एशिया और पश्चिम एशिया को बड़े संकट का सामना करना पड़ सकता है। कारण यह है कि यहां पर संसाधन सीमित होते जा रहे हैं जबकि जनसंख्या में वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक हो रही है।

एशियन डेवलपमेंट बैंक और एशिया-पेसिफिक वॉटर फोरम द्वारा जारी एशियन वॉटर डेवलपमेंट आउटलुक 2013 में बताया गया है कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 75 प्रतिशत देशों में जल सुरक्षा का अभाव है और कई देश ऐसे हैं, जहां यदि तत्काल कदम नहीं उठाए गए तो, बेहद चुनौतीपूर्ण स्थितियां पैदा हो सकती हैं। सच्चाई यह है कि आगे बढ़ने की होड़ में देशों ने अपने उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों की घोर उपेक्षा की है। उन्हें संजोने की बजाय उनका अतिदोहन कर उन्हें नष्ट कर दिया है। एक अनुमान के मुताबिक आज से लगभग 20 वर्ष पहले चीन में 50,000 नदियां थीं जिनमें से प्रत्येक औसतन 60 वर्ग मील क्षेत्र को कवर करती थीं। लेकिन अब इनमें से 28,000 नदियां गायब हो चुकी हैं।

भारत के पास दुनिया का चार प्रतिशत नवीकरणीय जल संसाधन है जबकि जनसंख्या 17 प्रतिशत। यहां दो तिहाई भूजल भंडार खाली हो चुके हैं और जो बचे हैं वे प्रदूषित होते जा रहे हैं। संभावना है कि 2050 तक भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए आबादी के मामले में पहले नंबर पर पहुंच जाएगा लेकिन उस स्थिति में लगभग 160 करोड़ लोगों के लिए जल संकट विकराल रूप धारण कर सकता

है। ऐसे में जल संसाधनों पर ध्यान देना बेहद ज़रूरी है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने चेतावनी देते हुए कहा है कि मौजूदा समय में विश्व के अनेक हिस्सों में पानी की भारी समस्या है और यदि पानी की बर्बादी नहीं रोकी गई तो स्थिति और विकराल हो जाएगी। वर्ष 2050 तक विश्व की आबादी मौजूदा सात अरब से बढ़कर नौ अरब हो जाएगी। पानी, भोजन की मांग और जलवायु परिवर्तन की समस्या दिनोंदिन बढ़ती चली जाएगी। मांग बढ़ने पर विभिन्न देश अपने आर्थिक और राजनीतिक लाभ के लिए जल का इस्तेमाल करने से नहीं हिचकेंगे। इसकी वजह से अस्थिरता और क्षेत्रीय तनाव बढ़ेंगे। दक्षिण एशिया में ब्रह्मपुत्र नदी क्षेत्र संभावित जोखिम वाला इलाका होगा। आने वाले समय में अनेक चुनौतियां सामने आएंगी। कृषि की बढ़ती ज़रूरतों, खाद्यान्न उत्पादन, ऊर्जा उपभोग, प्रदूषण और जल प्रबंधन की कमज़ोरियों की वजह से स्वच्छ जल की आपूर्ति पर दबाव बढ़ रहा है। यही नहीं, पिछले 50 साल में भूजल दोहन तीन गुना बढ़ चुका है। बिना बेहतर योजना और संयोजन के लाखों लोगों को भुखमरी, बीमारियों, ऊर्जा की कमी और गरीबी से जूझना होगा।

जहां तक एशिया महाद्वीप का सवाल है, दुनिया की 60 फीसदी आबादी यहां रहती है लेकिन इन इलाकों में जल संसाधनों का मात्र एक तिहाई हिस्सा ही है। राष्ट्रीय जल नीति प्रारूप - 2013 के मुताबिक भारत में 4000 अरब घन मीटर वर्षा होती है जबकि इसमें से उपयोग में लाया जाने वाला जल संसाधन लगभग 1123 अरब घन मीटर ही है। गौरतलब है कि 48 फीसदी वर्षा जल नदियों में पहुंचता है, जबकि भंडारण और संसाधनों की कमी के चलते केवल 18 फीसदी का ही उपयोग हो पाता है। भारत में घरेलू, कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों में हर साल 829 अरब घन मीटर पानी का उपयोग किया जाता है। अधिकांश वर्षा जल का नदियों के रास्ते समुद्र में बह जाना एक गंभीर चुनौती है।

पर्यावरण विशेषज्ञ वर्षा जल संचयन पर बल देते रहे हैं। यदि तालाबों और झीलों जैसे पारंपरिक जल स्रोतों के संरक्षण-संवर्धन पर ध्यान दिया गया होता तो कुछ बात बन सकती थी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ और उन पर कांक्रीट के जंगल खड़े होते गए। राज्यों में प्राकृतिक जल स्रोतों की देखरेख के लिए अलग से विभाग हैं जो जलाशयों में गाद और प्रदूषण रोकने के लिए योजनाएं बनाते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से वे कागज़ों पर ही रह जाती हैं। यदि देश की बढ़ती आबादी और औद्योगीकरण को आधार मानें तो 2050 तक पानी की ज़रूरत लगभग 1.447 घन कि.मी. हो जाएगी। भविष्य में मांग और आपूर्ति के इस भीषण अंतर को पाटना आसान नहीं होगा।

आज देश के आवासीय, औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में भूजल के बढ़ते दोहन से पानी का संकट और गहरा गया है। ज़्यादातर इलाकों में पानी की गुणवत्ता में कमी आ रही है और साफ पानी में रहने वाले जीवों की प्रजातियों की विविधता और पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंच रहा है। तटीय और तट से लगे क्षेत्र पानी के खारेपन की समस्या से जूझ रहे हैं। नदी जल भी पीने लायक नहीं बचा है। बढ़ते जल संकट से निपटने के लिए विकेंद्रित जल प्रबंधन अपनाने, जल के निजीकरण की जगह सामुदायीकरण करने और जल स्रोतों को अतिक्रमण से बचाने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 114 का हल

वा	य	वी	य		गो	च	र
त			म	ग	रि	ब	ट
भ	ड्ड	री		वा		र	स	ना
ट्टी		छ	र	ह	रा		पा	
	ऊ		स		म		ट	
	स		द	शा	न	न		भा
पा	र	स		व		म	क	र
द		त	र	क	श			ही
प	ना	ह			ब	च	प	न